

सूरह काफ़ - 50



सूरह काफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 45 आयतें हैं।

- इस सूरह का आरंभ, अक्षर (काफ़) से हुआ है। जो इस का यह नाम रखने का कारण है।
- इस में कुर्आन की महिमा का वर्णन करते हुये मौत के पश्चात् जीवन से संबन्धित संदेहों को दूर किया गया है। और आकाश तथा धरती के उन लक्षणों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन पर विचार करने से मौत के पश्चात् जीवन का विश्वास होता है।
- इस में उन जातियों के परिणाम द्वारा शिक्षा दी गई है जिन्होंने उन रसूलों को झुठलाया जो दूसरे जीवन की सूचना दे रहे थे।
- इस में कर्मों के अभिलेख तथा नरक और स्वर्ग का ऐसा चित्र दिखाया गया है जिस से लगता है कि यह सब सामने हो रहा है।
- आयत 36 और 38 में शिक्षा दी गई है, और अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अपने स्थान पर स्थित रह कर कुर्आन द्वारा शिक्षा देते रहने के निर्देश दिये गये हैं।

हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) प्रत्येक जुमुआ को मिम्बर पर यह सूरह पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम: 873)

इसी प्रकार आप इसे दोनों ईद की नमाज़, और फ़ज्र की नमाज़ में भी पढ़ते थे। (मुस्लिम: 878, 458)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. काफ़ा शपथ है आदरणीय कुर्आन की!
2. बल्कि उन्हें आश्चर्य हुआ कि आ
गया उन के पास एक सवधान करने

قَالَ وَالْقُرْآنُ الْمَجِيدُ
بَلْ عَجَبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ فَقَالَ الْكَافِرُونَ

هَذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ۝

वाला उन्हीं में से। तो कहा काफ़िरों ने यह तो बड़े आश्चर्य^[1] की बात है।

عَلَّامَاتُنَا وَكُنَّا غُرَابًا ۚ ذَٰلِكَ رَجْعُ الْبَعِيدِ ۝

3. क्या जब हम मर जायेंगे और धूल हो जायेंगे? तो यह वापसी दूर की बात^[2] (असंभव) है।

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ وَعِنْدَنَا كِتَابٌ حَفِيظٌ ۝

4. हमें ज्ञान है जो कम करती है धरती उन का अंश, तथा हमारे पास एक सुरक्षित पुस्तक है।

بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَّرِيدٍ ۝

5. बल्कि उन्होंने झुठला दिया सत्य को जब आ गया उन के पास। इसलिये उलझन में पड़े हुये हैं।

أَفَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوجٍ ۝

6. क्या उन्होंने नहीं देखा आकाश की ओर अपने ऊपर कि कैसा बनाया है हम ने उसे और सजाया है उस को और नहीं है उस में कोई दराड़?

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَابِي وَأَنْثَقْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيمٍ ۝

7. तथा हम ने धरती को फैलाया, और डाल दिये उस में पर्वत। तथा उपजायीं उस में प्रत्येक प्रकार की सुन्दर वनस्पतियाँ।

نَبْصِرَةٌ وَدُرَىٰ لِلْكَافِرِ الْعَبِيدِ ۝

8. आँख खोलने तथा शिक्षा देने के लिये प्रत्येक अल्लाह की ओर ध्यानमग्न भक्त के लिये।

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبَارَكًا فَأَنْبَتْنَا بِهِ جَبَلٍ وَحَبَّ الْحَبِيدِ ۝

9. तथा हम ने उतारा आकाश से शुभ जल, फिर उगाये उस के द्वारा बाग तथा अन्न जो काटे जायें।

1 कि हमारे जैसा एक मनुष्य रसूल कैसे हो गया?

2 सुरक्षित पुस्तक से अभिप्राय ((लौहे महफूज़)) है। जिस में जो कुछ उन के जीवन-मरण की दशायें हैं वह पहले ही से लिखी हुई हैं। और जब अल्लाह का आदेश होगा तो उन्हें फिर बनाकर तय्यार कर दिया जायेगा।

10. तथा खजूर के ऊँचे वृक्ष जिन के गुच्छे गुथे हुये हैं।
11. जीविका के लिये भक्तों की, तथा हम ने जीवित कर दिया निर्जीव नगर को। इसी प्रकार (तुम्हें भी) निकलना है।
12. झुठलाया इस से पहले नूह की जाति तथा कूबे के वासियों एवं समूद ने।
13. तथा आद और फिरऔन एवं लूत के भाईयों ने।
14. तथा ऐका के वासियों ने, और तुब्बअ^[1] की जाति ने। प्रत्येक ने झुठलाया^[2] रसूलों को। अन्ततः सच्च हो गई (उन पर) हमारी धमकी।
15. तो क्या हम थक गये हैं प्रथम बार पैदा कर के? बल्कि यह लोग संदेह में पड़े हुये हैं नये जीवन के बारे में।
16. जब कि हम ने ही पैदा किया है मनुष्य को और हम जानते हैं जो विचार आते हैं उस के मन में। तथा हम अधिक समीप हैं उस से (उस की) प्राणनाड़ी^[3] से।

وَالنَّخْلَ بَسَقَتْ لَهَا طَلْعُ نُضِيدٍ ۝

رَبُّ قَالَ لِلْعِبَادِ وَأَحْيَيْنَاهُ بَلَدًا مَيِّتًا كَذَلِكَ
الْخُرُوجُ ۝

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَابُ الرَّسِّ وَشُودُ ۝

وَعَادُ وَفِرْعَوْنُ وَأَخْوَانُ لُوطٍ ۝

وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ
فَحَقَّ وَعِيدُ ۝

أَفَعِصْنَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِنْ
خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ
وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۝

1 देखिये: सूरह दुखान, आयत: 37।

2 इन आयतों में इन जातियों के विनाश की चर्चा कर के कुर्आन और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को न मानने के परिणाम से सावधान किया गया है।

3 अर्थात् हम उस के बारे में उस से अधिक जानते हैं।

17. जब कि^[1] (उस के) दायें-बायें बैठे दो फरिश्ते लिख रहे हैं।
18. वह नहीं बोलता कोई बात मगर उसे लिखने के लिये उस के पास एक निरीक्षक तय्यार होता है।
19. आ पहुँची मौत की अचेतना (बे होशी) सत्य ले कर। यह वही है जिस से तू भाग रहा था।
20. और फूँक दिया गया सूर (नरसिंघा) में। यही यातना के बचन का दिन है।
21. तथा आयेगा प्रत्येक प्राणी इस दशा में कि उस के साथ एक हाँकने^[2] वाला और एक गवाह होगा।
22. तू इसी से अचेत था, तो हम ने दूर कर दिया तेरे पर्दे को, तो तेरी आँख आज खूब देख रही है।
23. तथा कहा उस के साथी^[3] ने: यह है जो मेरे पास तय्यार है।
24. दोनों (फरिश्तों को आदेश होगा कि) फेंक दो नरक में प्रत्येक काफ़िर (सत्य के) विरोधी को।
25. भलाई के रोकने वाले, अधर्मी,

إِذْ يَتَلَفَّى السَّمْعَيْنِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ
قُعُودًا ۝

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ۝

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ
مُعْتِيدًا ۝

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ذَلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ۝

وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَعَها سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ۝

لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ مِنْ هَذَا فَكْشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَكَ
فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ۝

وَقَالَ قَرِينُهُ هَذَا مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ۝

الْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلٌّ كَفَّارٌ عَيْنِي ۝

مُنَادٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَذِرٌ مُرِيدٌ ۝

- 1 अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति के दायें तथा बायें दो फरिश्ते नियुक्त हैं जो उस की बातों तथा कर्मों को लिखते रहते हैं। जो दायें है वह पुण्य को लिखता है। और जो बायें है वह पाप को लिखता है।
- 2 यह दो फरिश्ते होंगे एक उसे हिसाब के लिये हाँक कर लायेगा, और दूसरा उस का कर्म-पत्र प्रस्तुत करेगा।
- 3 साथी से अभिप्राय वह फरिश्ता है जो संसार में उस का कर्म लिख रहा था। वह उस का कर्म-पत्र उपस्थित कर देगा।

संदेह करने वाले को।

26. जिस ने बना लिये अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य, तो दोनों को फेंक दो कड़ी यातना में।

لَاذَى جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَأَلْقِيَهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ۝

27. उस के साथी (शैतान) ने कहा: हे हमारे पालनहार! मैं ने इसे कुपथ नहीं किया, परन्तु वह स्वयं दूर के कुपथ में था।

قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَلَكِنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝

28. अल्लाह ने कहा: झगड़ा न करो मेरे पास। मैं ने तो पहले ही (संसार में) तुम्हारी ओर चेतावनी भेज दी थी।

قَالَ لَا تَخْصَمُوهُنَّ لَدُنِّي وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُم بِالْوَعِيدِ ۝

29. नहीं बदली जाती बात मेरे पास^[1], और न मैं तनिक भी अत्याचारी हूँ भक्तों के लिये।

يَا بَدِّلُ الْقَوْلِ لَدُنِّي وَمَا أَنَا بِظَالِمٍ لِلْعَالَمِينَ ۝

30. जिस दिन हम कहेंगे नरक से कि तू भर गई? और वह कहेगी क्या कुछ और है?^[2]

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأَتْ وَنَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ ۝

31. तथा समीप कर दी जायेगी स्वर्ग, वह सदाचारियों से कुछ दूर न होगी।

وَأَزَلَّتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ۝

32. यह है जिस का तुम को वचन दिया जाता था, प्रत्येक ध्यानमग्न रक्षक^[3] के लिये।

هَذَا مَا تُوْعَدُونَ لِكُلِّ أَزَافٍ حَفِيفٍ ۝

33. जो डरा अत्यंत कृपाशील से बिन देखे तथा ले कर आया ध्यान मग्न दिला।

مَنْ خَشِيَ الرَّحْمَنَ الْغَيْبَ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُنِيبٍ ۝

34. प्रवेश कर जाओ इस में शान्ति के

إَدْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ذَلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ۝

1 अर्थात् मेरे नियम अनुसार कर्मों का प्रतिकार दिया गया है।

2 अल्लाह ने कहा है कि वह नरक को अवश्य भर देगा। (देखिये: सूरह सज्दा, आयत: 13)। और जब वह कहेगी कि क्या कुछ और है? तो अल्लाह उस में अपना पैर रख देगा। और वह बस-बस कहने लगेगी। (बुखारी: 4848)

3 अर्थात् जो अल्लाह के आदेशों का पालन करता था।

साथ। यह सदैव रहने का दिन है।

35. उन्हीं के लिये जो वे इच्छा करेंगे उस में मिलेगा। तथा हमारे पास (इस से भी) अधिक है।^[1]

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ۝

36. तथा हम विनाश कर चुके हैं इन से पूर्व बहुत से समुदायों का जो इन से अधिक थे शक्ति में। तो वह फिरते रहे नगरों में, तो क्या कहीं कोई भागने की जगह पा सके?^[2]

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِنْ مَخْرُجٍ ۝

37. वास्तव में इस में निश्चय शिक्षा है उस के लिये जिस के दिल हो, अथवा कान धरे और वह उपस्थित^[3] हो।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرًا لِمَنْ كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ۝

38. तथा निश्चय हम ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को और जो कुछ दोनों के बीच है छः दिनों में, और हमें कोई थकान नहीं हुई।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِنْ لُغُوبٍ ۝

39. तो आप सहन करें उन की बातों को तथा पवित्रता का वर्णन करें अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ सूर्य के निकलने से पहले तथा डूबने से पहले।^[4]

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۝

1 अधिक से अभिप्राय अल्लाह का दर्शन है। (देखिये: सूरह यूनस, आयत: 26, की व्याख्या में: सहीह मुस्लिम: 181)

2 जब उन पर यातना आ गई।

3 अर्थात् ध्यान से सुनता हो।

4 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने चाँद की ओर देखा। और कहा: तुम अल्लाह को ऐसे ही देखोगे। उस के देखने में तुम्हें कोई बाधा न होगी। इसलिये यदि यह हो सके कि सूर्य निकलने तथा डूबने से पहले की नमाज़ों से पीछे न रहो तो यह अवश्य करो। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (सहीह बुखारी: 554, सहीह मुस्लिम: 633)

यह दोनों फ़ज़ और अस्त्र की नमाज़ें हैं। हदीस में है कि प्रत्येक नमाज़ के पश्चात्

40. तथा रात के कुछ भाग में उस की पवित्रता का वर्णन करें और सज्दों (नमाजों) के पश्चात् (भी)।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ النُّجُودِ ۝

41. तथा ध्यान से सुनो, जिस दिन पुकारने वाला^[1] पुकारेगा समीप स्थान से।

وَأَسْمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادُ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۝

42. जिस दिन सब सुनेंगे कड़ी आवाज़ सत्य के साथ, वही निकलने का दिन होगा।

يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذَلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ۝

43. वास्तव में हम ही जीवन देते तथा मारते हैं और हमारी ओर ही फिर कर आना है।

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ۝

44. जिस दिन फट जायेगी धरती उन से, वह दौड़ते हुये (निकलेंगे) यह एकत्र करना हम पर बहुत सरल है।

يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ذَلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ۝

45. तथा हम भली-भाँति जानते हैं उसे जो कुछ वे कह रहे हैं। और आप उन्हें बल पूर्वक मनवाने के लिये नहीं हैं। तो आप शिक्षा दें कुर्आन द्वारा उसे जो डरता हो मेरी यातना से।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۝ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَنْ يَخَافُ وَعِيدِ ۝

अल्लाह की तस्बीह और हम्द तथा तक्बीर 33, 33 बार करो। (सहीह बुखारी: 843, सहीह मुस्लिम: 595)

1 इस से अभिप्राय प्रलय के दिन सूर में फूँकने वाला फरिश्ता है।